राष्ट्रीय

भारतीय मन के सबसे बड़े लेखक थे नरेंद्र कोहली: गोयनका

-साहित्य अकादेमी ने साहित्यकार नरेंद्र कोहली की स्मृति में किया श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (हि.स.)। साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात साहित्यकार डॉ. नरेंद्र कोहली की स्मृति में सोमवार को आभासी मंच पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। सबसे पहले अपना वक्तव्य देते हुए केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. कमल किशोर गोयनका ने कहा कि वे "भारतीय मन " के सबसे बड़े लेखक थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रश्न को लेकर हिंदी के गद्य साहित्य को अतुलनीय योगदान दिया। उन्हें आधुनिक तुलसीदास के रूप में याद किया जाना चाहिए।

छत्तीसगढ़ के कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि वह अपने दौर के सबसे चमकते सितारे थे। आधुनिक साहित्य को लोकोपकारी छवि प्रस्तुत करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। व्यापक चिंतन और व्यंग्य का पैनापन एक ही साहित्यकार में मिलना दुर्लभ है। उन्होंने भारतीय साहित्य को नई दिशा दी। प्रख्यात नाटककार दया प्रकाश सिन्हा ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मैं उनके निधन से बहुत आहत हूं। कोहली जी राष्ट्रवादी लेखकों की पहली पंक्ति के लेखक थे। उनमें कोई अहंकार नहीं था। कालजई रचनाओं के विलक्षण लेखक थे कोहली।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव प्रोफेसर सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि कोहली जी रामकथा न लिखते तो नई पीढ़ी हमारे कई महानायकों को पढ़ने से वंचित रह जाती। उन्होंने भारतीय संस्कृति और अस्मिता को जन-जन तक पहुंचाया, वह भी सहज और सरल भाषा में। प्रख्यात पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि कोहली तुलसी से ज्यादा कबीर के नजदीक थे क्योंकि उनके जीवन के बहुत सारे रंग कबीर से मिलते थे खास तौर पर उनका संघर्ष। वह अकेले राष्ट्रवाद की ज्वाला को जलाए रखने वाले पहले लेखक थे।

साहित्यकार चित्रा मुद्गल ने उनको याद करते हुए कहा कि उनको खोना मेरे लिए एक पारिवारिक मित्र का खोना है। वे एक जिद्दी और जुनूनी लेखक थे। साहित्यकार दिविक रमेश ने उनकी भाषा और शैली की विशेषता को बताते हुए कहा कि वह एक समर्पित लेखक थे और उन्होंने विपुल लेखन किया। कवि बुद्धिनाथ मिश्र ने कहा कि वह केवल हिंदी नहीं बल्कि भारतीय भाषाओं के बड़े लेखक थे। उन्हें पढ़ना बेहद जरूरी है। वे पुरस्कारों के रचनाकार नहीं बल्कि पाठकों के रचनाकार थे।

अंत में साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चितरंजन मिश्र ने कहा कि नरेंद्र कोहली के राम जागृत जन शक्ति के प्रतीक थे। उनके लेखन से प्रेरणा और सीखने की जरूरत है। सभा का संचालन अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। प्रारंभ में उन्होंने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे समाज की विडंबना के ऊपर लिखने वाले लेखक थे। उन्होंने राम को भक्ति की भावना से निकाल कर वास्तविकता के धरातल पर खड़ा किया।

हिन्दुस्थान समाचार/ पवन कुमार अरविंद

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, बुधवार , 28 अप्रैल, 2021

नरेंद्र कोहली सच्चे राष्ट्रवादी लेखक थे

लखनऊ/ नयी दिल्ली। साहित्य अकादमी द्वारा हिंदी के प्रख्यात कथाकार नरेंद्र कोहली के निधन पर उनकी स्मृति में कल अयोजित एक आनलाइन सेमिनार में हिंदी के विभिन्न साहित्यकारों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा करते हुए उन्हें भावभीनीश्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के आरम्भ में अकादमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनके निधन से हिंदी साहित्य संसार ने भारतीय संस्कृति के एक सच्चे और मुखर प्रवक्ता को खो दिया है। अकादमी ने जब भी किसी काम के लिए उन्हें याद किया, वे हमेशा उपलब्ध रहे। उनका निधन हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है।

कमल किशोर गोयनका ने कहा कि नरेंद्र कोहली आधुनिक समय के तुलसीदास के

रूप में मान्य हैं। वास्तव में वे भारतीय मन के सर्वाधिक सशक्त लेखक थे। बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि उन्होंने लोकोपकारी साहित्य रचा। मानवीयता, राष्ट्रबोध, सांस्कृतिक चेतना और व्यंग्य दृष्टि से सम्पन्न उनका साहित्य विरल है। दया प्रकाश सिन्हा ने उनके साथ अपने पचास वर्षों के संबंधों का हवाला देते हुए कहा कि राष्ट्रवादी लेखकों की पंक्ति में कोहली जी अग्रणी थे। सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि वह संपूर्ण भारतीय संस्कृति और भारतीय अस्मिता के लेखक थे । उनका जाना भारतीय साहित्य की मनीषा का भारी नुकसान है । अनामिका ने कहा की परंपरा एक ऐसी बैटरी है जिसे सदैव नए साकेट से चार्ज करने की जरूरत होती है और नरेंद्र कोहली ने प्राचीन कथाओं के पुनर्लेखन के माध्यम से यही काम किया। अनंत विजय ने कहा कि मुझे उनमें कबीर के तत्व ज्यादा नजर आते हैं। वास्तव में तुलसी और कबीर की चेतना के समन्वित व्यक्तित्व के रूप में उन्हें मूल्यांकित करने की जरूरत है । चित्रा मुद्गल ने कहा कि उनको खोना मेरे लिए एक पारिवारिक मित्र को खोना है । उनकी विभिन्न कृतियों को संदर्भित करते हुए उन्होंने तोड़ो कारा तोड़ो को उनके अप्रतिम कृति के रूप में याद किया । दिविक रमेश ने कहा कि वह एक अनुशासित शिक्षक थे । पुराकथाओं से इतर उनके लेखन पर भी बात होनी चाहिए और उनका समग्र मूल्यांकन किया जाना चाहिए । मंजुला राणा ने कहा कि मैं नरेंद्र कोहली को सांस्कृतिक राष्ट्रवादी लेखक के रूप में स्वीकार करती हूं । भारतीय साहित्य ने उनके निधन से एक युगपुरुष खो दिया है ।

इस अवसर पर कई महत्वपूर्ण लेखकों, प्रेम जनमेजय, बुद्धिनाथ मिश्र नंद किशोर पांडे और चितरंजन मिश्र ने भी उनसे जुड़े संस्मरण को साझा करते हुए उनके कृतित्व और योगदान की चर्चा की और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की । सभा के अंत में सचिव साहित्य अकादमी ने कहा की हिंदी के प्रसिद्ध लेखक रमेश उपाध्याय, मंजूर एहतेशाम और सुरेश गौतम को भी हमने खो दिया है । उन्हें भी साहित्य अकादमी की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि ।